ओ३म्

परमात्माजयति ॥

दयानन्दमत दर्पण ॥

मुरादाबाद निवासी
जगन्नाथदास सङ्कलित

जिस को ॥

पं० भीमसेन शर्म्मा ने ब्रह्मप्रेस
इटावा में छपा कर
प्रकाशित किया

सन् १९०६ ईसवी संवत् १९६३ वि०

धर्म सभायें और धर्मात्मा लोग इसे छपवायें वा १) सैकड़ा यहां से मंगा कर सर्वत्र फैलायें ॥

ओ३म् परमात्माजयति ॥

दयानन्दमतदर्पण

—○:*:○:+:○:*:○—

रचा सब सृष्टि को जिसने उसी को शिर झुकाओ जी ।
करो ध्यान उसका ही निशदिन उसीसे लौ लगाओजी॥१॥
तुम्हें अब मत दयानन्दी की बातें कुछ सुनाता हूं ।
जगत् को जालमें उसके वृथा तुम मत फसाओ जी ॥२॥
लिखीं ग्यारहसौ सत्ताइस शाखा उसने वेदों की ।
जरा महाभाष्य से स्वामीका लेख अपने मिलाओजी ॥३॥
लिखा है उसने शाखाओं को जो व्याख्यान वेदों का ।
किसी शाखा में तो व्याख्या श्रुतिकी तुम दिखाओजी ॥४॥
जिन्हें तुम वेद कहते हो वह शाखा शाकलादि हैं ।
न समझो वेद शाखाओंको तो वेद और लाओजी ॥५॥
लिखा है वेद की व्याख्या में हा वध नीलगायों का ।
यजु के भाष्य से इस को कृपा करके मिटाओ जी ॥६॥
लिखा है नाचना गाना वजाना स्वामी साहिबने ।
जरा जो तुम नहीं जानो तो सीखो और सिखाओजी ॥७॥

३-४ सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १९८४ का पृष्ठ ५८७ ।
६ दयानन्दकृत यजुर्वेदभाष्यअध्याय १३ मंत्र ४९ का भावार्थ
७-उक्त भाष्य अध्याय ३० मंत्र २० का भावार्थ

यजुके भाष्य में उसने लिखा घी दूध बकरी का ।
कहो जो तुम कहीं ऐसा तो जड़ बुद्धि कहाओ जी ॥८॥
जो बुद्धि चाहो आपों की कहां बुद्धि तुम्हारी है ।
जगत् को इससे दुःख होगा कि सुख तुमहीं बताओजी॥९॥
लिखा गुरुजी का जो मानो तो उल्लू को भी पालोतुम ।
ये स्वामीजी की आज्ञा है गधों को भी बढ़ाओजी ॥१०॥
अरे वैश्यो ! तुम्हें उसने लिखा है ऊंट को सहश ।
बनाये जो पशु तुम को उसे गुरु क्यों बनाओ जी ॥११॥
लिखी शूकर की जो उपमा उस अज्ञानी ने भूपति को ।
उचित है तो किसी राजाको तुम जाकर सुनाओजी॥१२॥
लिखा तुम वेद और ईश्वर की आज्ञा का करो पालन ।
समंजस है कि असमंजस ये लेख इसका बताओजी ॥१३॥
लिखा विद्वान् को जो उसने आकाश की सदृश है ।

---

८ उक्त भाष्य अध्याय २१ मंत्र ४३ का पदार्थ ।

९ उक्त भाष्य अध्याय ३० मंत्र २१ का पदार्थ ।

१० उक्त भाष्य अध्याय २४ मंत्र ३३ का पदार्थ । तथा अध्याय १९ मंत्र ३२ का पदार्थ ।

११ उक्त भाष्य अध्याय १४ मंत्र ९ का पदार्थ ।

१२ उक्त भाष्य अध्याय १६ मंत्र ५२ का पदार्थ ।

१३ उक्त भाष्य अध्याय १० मंत्र २२ का भावार्थ

हंसो इस बुद्धि पर उसकी जगतको तुम हंसाओ जी ॥१४॥
अनृतवादी को लिक्खा है असुर राक्षस प्रकट उसने।
उसे इस दोषसे कैसे भला अब तुम बचाओ जी ॥१५॥
जिसे सत्यार्थ कहते हो असत् ही की वह खानि है।
सुनाऊं मैं अनृत उसका सुनो सब को सुनाओ जी ॥१६॥
लिखा है पूतना का अङ्ग जैसा चौड़ा औ लम्बा।
ज़रा एक भागवत में तो हमें वैसा दिखाओ जी ॥१७॥
कथा प्रहलाद की जो कुछ कि स्वामी जी ने गाई है।
असत् है झूठ है मिथ्या है अनृत है मिटाओ जी ॥१८॥
चटाई की सदृश पृथ्वी को राक्षस ने लपेटा था।
ये जिस पुस्तक में लिक्खा हो उसे तुमहीं जलाओजी ॥१९॥
रथेन वायु वेगेन जगाम गोकुलम् प्रति।
कहां है भागवत में यह दिखाओ जी दिखाओजी ॥२०॥
भला हेमाद्रि में वर्णन कहां श्रीभागवत का है।

---

१४ उक्त भाष्य अध्याय २७ मंत्र ३४ का पदार्थ।
१५ उक्त भाष्य अध्याय १ मंत्र ५ का भावार्थ।
१७ सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १८८४ का पृष्ठ ३३४
१८। १९ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३३।
२० उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३४।

जो कुछ संदेह है पढ़कर उसे तुम मन मनाओ जी ॥२१॥
न देवीभागवत में भी लिखी गाथा कहीं वैसी ।
कि जैसी विष्णु शिव ब्रह्मा की निंदा तुम सुनाओजी ॥२२॥
जो उसने एक स्त्री को पति ग्यारह की आज्ञा दी ।
करो येही श्रुति से सिद्ध पण्डित को बुलाओ जी ॥ २३ ॥
लिखा है गर्भिणी को भी नियोग उसने ज़रा समझो ।
दुबारा गर्भ फिर कैसे भला धारण कराओ जी ॥ २४ ॥
पति परदेश को जाये जने घर पत्नी सुत पीछे ।
गुरू की आज्ञा मानो तो धर्म उसका चलाओ जी ॥२५॥
श्रुति के अर्थ में देखो किया कैसा अनर्थ उस ने ।
पति कर दूसरा प्यारी ये पत्नी को सिखाओजी ॥ २६ ॥
ये छापे की अशुद्धि हैं कि है अज्ञान गुरुजी का ।
विना हठ और दुराग्रह के तुम्हीं सच २ बताओ जी ॥२७॥
कहीं भी शास्त्र में मुक्ति से लौटआना नहीं लिक्खा ।

---

२१ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ३३५ ।
२२ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २९९ ॥
२३ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११८ ॥
२४ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ १०० ।
२५ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११९ ।
२६ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ ११८ ।

ज़रा चालें चलो सीधी न उलटे गीत गाओ जी ॥ २८ ॥
जो कारागार और फांसी सदृश मुक्ति को बतलाये ।
उसे अज्ञों के अधिपति की कोई पगड़ी बंधाओ जी ॥२९॥
वचन को व्यास के जिस ने कहा प्रतिकूल वेदों के ।
हम उस को नास्तिक कहते हैं तुम चाहो तो गाओ जी ॥३०॥
श्रुति प्रत्यक्ष कहती हैं अनावृत्ति है मुक्ति से ।
विरुद्ध उनके बताकर तुम भला क्या लाभ उठाओ जी ॥३१॥
कहो परमात्मा का नाम नारायण जो निज मुख से ।
तो है यह नास्तिकता जो बुरा उस को बताओ जी ॥३२॥
कहीं स्थिर नहीं चलना लिखा है उस ने पृथ्वी का ।
भला इस दोष से कैसे उसे अब तुम बचाओ जी ॥ ३३ ॥
लिखे सौवर्ष के दिन जो सो वह भी दशगुणे लिक्खे ।

---

२८ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४० ।
२९ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४१ ।
३० उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २३९ ।
३२ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ १९ फिर २६ ।
३३ दूसरी वार की छपी संस्कारविधि के पृष्ठ १८९ में पृथ्वी के स्थिर होने की श्रुति है और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के पृष्ठ १३६ से १३९ तक तथा उक्त सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ २२८ में पृथ्वी का चलना लिखा है ।

तुमं ऐसे मूर्ख को कैसे भला पण्डित बताओ जी ॥ ३४ ॥
की भाषा ग्रन्थ सब मिथ्या हैं स्वामी जी की बुद्धि में।
तो फिर सत्यार्थ को भी तुम नदी में अब बहाओजी ॥३५॥
मनु के श्लोक से जो कुछ दशा वर्णों की लिक्खी है।
कहां आशय है वह उस का न झूठें गीत गाओजी ॥३६॥
शिखा और सूत्र के त्यागी. को ईसाई सदृश लिक्खा।
किया दोनों का त्याग उसने उसे तुम क्या बताओजी ॥३७॥
लिखा है युद्ध से भागे नृपति शत्रु को धोखा दे।
कहां गीता में है ऐसा ये धोखा तुम न खाओजी ॥ ३८ ॥
असुर राक्षस पिशाच उसने अविद्वानादिको लिक्खा।
ओहों ऐसे समाजों में उन्हें तुम क्या बताओ जी ॥३९॥
हों गुण और कर्म संतानों में जिस २ वर्ण के सदृश।
तुम उन २ वर्णों से बदला सुतादिक का कराओजी ॥४०॥

---

३४ उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ २४१।
३५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ७१।
३६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८८।
३७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३७९।
३८ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ९१।
३९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५८८।
४०. उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८९।

जो इस आज्ञा का पालन हो तो हाहाकार मच जाये।
ये है किस वेदकी आज्ञा कोई यह तो बताओजी ॥४१॥
लिखा जानश्रुति को शूद्र है यह अज्ञता कैसी।
लिखा है व्यास ने क्षत्रिय न अब जिह्वा हिलाओजी ॥४२॥
जो निर्जल व्रत के लेखक को कसाई लिखदिया उसने।
लिखा जिसने कि गोवधतक उसे तुम क्या बताओजी ॥४३॥
लिखा है शूद्रको अब मन्त्र पढ़ने का निषेध उसने।
तो कैसे वेद का पढ़ना उसे फिर तुम बताओ जी ॥ ४४॥
लिखा सुख दुःख में परतन्त्र स्वामी जी ने जीवों को।
तो फिर क्यों कर्म करने में स्वतन्त्र उनको बताओजी॥४५॥
कहां लिक्खा है शङ्कर की हुआ मृत्यु का विष कारण।
भला क्यों दोष जैनों को वृथा झूठा लगाओ जी ॥४६॥
मनुके नाम से लिक्खा है धन संन्यासियों को दे।
मनु में श्लोक वह आधा लिखा गुरुका दिखाओ जी ॥४७॥

---

४२ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३३६।
४३ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३४५।
४४ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ४४ फिर ७४।
४५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५९०।
४६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २८७।
४७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १३५।

समित् पाणी श्रुति उस ने लिखी माण्डूक्य की मिथ्या।
मृषा अग्निर्यथैको न मुण्डक की बताओ जी ॥४८॥
न देख उसने उपनिषदों को जो चाहा सो लिखमारा।
तदैक्षत तैत्तिरीय की कहो झूठे कहाओ जी ॥ ४९ ॥
लिखा है नाम से वेदों के उस ने वाक्य गीता का।
कहो विद्वान् जो उस को तो वेदों में दिखाओ जी ॥५०॥
भला जो आचमन से पित्त और कफ़ शान्त होता है।
तो फिर रोग ग्रसित होकर न वैद्योंको बुलाओजी ॥५१॥
विना भोगे नहीं छुटता कभी अघ तुम यह कहते हो।
तो प्रायश्चित्त पतितों को वृथा फिर क्यों कराओजी ॥५२॥
अनन्त होने में जीवों के जो तुम झगड़ा मचाते हो।
कहीं तो शास्त्र में गणना हमें उनकी दिखाओजी ॥५३॥
नरक और स्वर्ग से लोकों को भी जो तुम नहीं मानो।

---

४८ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३८२ फिर २९०।
४९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २१०।
५० उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १२६।
५१ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ४१।
५२ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३२२।
५३ इस के खंडन में श्रीमन्मुंशी इन्द्रमणि जी का अनंततत्वप्रकाश देखो।

दिखाऊं वेद में दोनों निकट मेरे तो आओ जी ॥५४॥
ऋषि मुनियों के वचनों को कहो प्रतिकूल वेदों के।
तुम्हारीही ये शक्ति है जो जी चाहै सो गाओ जी ॥५५॥
रसोई का बनाना काम शूद्रों का वह लिखता है।
कहार और नाई से बनवाओ रोटीदाल खाओ जी ॥५६॥
नदी पर वृक्ष पर मकान पर हो नाम जिस त्रिय का।
विवाह उससे है क्यों वर्जित बताओजी बताओजी ॥५७॥
लिखा है ग्रहण के निर्णय में उस ने वाक्य छलबल से।
कहां है वह शिरोमणि में कोई आओ दिखाओ जी ॥५८॥
जो शिर पर बाल रखने से घटै है बुद्धि पुरुषों की।
तो फिरनिजस्त्रियों के शिर भी तुमनिश्चय मुंडाओजी ॥५९॥
जो तुम उपनयन को एक चिह्न विद्या का बताते हो।
अविद्वान्और शिशुकोफिरजनेऊ क्यों पिन्हाओजी ॥६०॥

---

५४ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५९० ।
५५ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५८७ ।
५६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २६३ ।
५७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ८७ ।
५८ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३३८ ।
५९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २५६ ।
६० उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३७९ ।

हों जिस मत में करोरों जन बारो उसका न तुम खण्डन ॥
तुम्हीं झूठेही जो उसके लिये झूठा बताओजी ॥ ६१ ॥
ये स्वामी जी की युक्ति है उन्हें झूठा किया जिसने ।
हंसी वेद बुद्धि पर कोई कोई आंसू बहाओजी ॥ ६२ ॥
लिखा उस ने कि वेदों में भी अनुकूल हो सब के ।
उसी को सत्य तुम जानो विरुद्ध अनृत बताओ जी ॥६३॥
किया है सर्वथा खण्डन प्रकट यह उसने वेदों का ।
न समझे हो तो समझाऊं जो मेरे पास आओजी ॥६४॥
वधू बलदेव की लिक्खा है उसने रोहिणी को हा ।
नहीं लज्जा कि माता को भी तुम पत्नी बताओजी ॥६५॥
गधीसम गाय को लिक्खा सो लिक्खा उसने क्याकीजे ।
न अक्षीरा को दो जल तृण ये अघ तो मत कमाओजी ६६
लिखी जीवों की उत्पत्ति गुरु ने देखले तेरे ।
अनादि फिर लिखा उन को विरुद्ध ऐसा न गाओ जी ॥६७॥

---

६१ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ५४६ ।
६३ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३८२ ।
६५ सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १८७५ का पृष्ठ १०७ ।
६६ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ १४८ ।
६७ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ २३२ फिर सत्यार्थ० १८८४ का पृष्ठ २०६ ।

लिखा है मांस से दो काल करना होम भी उस ने ।
घरों में अपने इस खुशबूको वस तुम ही बसाओ जी ॥६८॥
वृषभ और गाय का बध भी लिखा है तेरे स्वामी ने ।
छपाने से कहीं छुपता है कितना ही छुपाओ जी ॥६९॥
न हो घी आधमन भी जो तो फिर मुरदे को मत फूंको।
उसे जंगल में जाकर दूर छोड़ आओ सड़ाओजी ॥ ७० ॥
मृतककी भस्म और अस्थी को बाग़ और खेत में डालो ।
नहीं लज्जा कि तुम वृद्धों की यूं धूली उड़ाओजी ॥ ७०॥
मृतककी भस्म और अस्थी को बाग़ और खेत में डालो।
नहीं लज्जा कि तुम वृद्धों की यूं धूली उड़ाओ जी ॥७१॥
ये देखो तो लिखा क्या है भला उस बुद्धि सागर ने ।
कि हो जब गर्भ में बेटा उसे कपड़े पिन्हाओ जी ॥ ७२ ॥
जनेगी पुत्र वह ऐसा कि होगा वेद का ज्ञाता ।
जो भांत और मांस पत्नीको पकाकर तुम खिलाओजी ७३
लिखा है गर्भ धारण में जो निन्दित रात्रि आठ उसने ।

---

६८ सत्यार्थ० १८७५ का पृष्ठ ४५ ।
६९ उक्त सत्यार्थ० का पृष्ठ ३०३ ।
७० संस्कारविधि मुद्रित संवत् १९३३ का पृष्ठ १४१ ।
७१ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ १५० ।
७२ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ ४१ ।
७३ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ ११ ।

मनु के लेख से कोई हमें आकर गिनाओ जी ॥ ७४ ॥
जो गणना सृष्टि वर्षोंके लिखी गत शेष की उसने ।
नहीं वहां भूल लाखोंकी करोरों की बताओ जी ॥ ७५ ॥
अथर्वणा बेद में हमको दिखाओ मंत्र गायत्री ।
श्रुति छांदोग्य में यह्वै कहां है ये बताओ जी ॥ ७६ ॥
तुम्हारी रत्नमाला में लिखा है आर्य का लक्षण ।
किसी के कर्म और गुण तो ज़रा उससे मिलाओ जी ॥ ७७ ॥
पर स्त्री परपुरुष संगमही को व्यभिचार कहते हो ।
नहीं व्यभिचार पति ग्यारह जो पत्नी को कराओजी ॥ ७८ ॥
बचाये प्राण स्वामी जी ने कैसे रीछ से बन में ।
हमें वृत्तान्त वह भी तो सुनाओ जी सुनाओ जी ॥ ७९ ॥
तुम्हीं कहते हो स्वामी जी ने मुरदा चीर डालाथा ।
उन्हें इस कर्म और गुण की कोई पदवी दिलाओजी ॥ ८० ॥

---

७४ उक्त संस्कारविधि का पृष्ठ १३ ।
७५ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ २३ । २५ ।
७६ पंचमहायज्ञविधि मुद्रित संवत् १९३४ का पृष्ठ २६ ।
फिर सत्यार्थप्रकाश १८७५ का पृष्ठ १४७ ।
७७ । ७८ आर्योद्देश्यरत्नमाला पृष्ठ ११ । २०
७९ दयानन्द का जीवनचरित्र द्दलपतराय लिखित पृष्ठ ६१ ।
८० उक्त जीवनचरित्र का पृष्ठ ५६ । ५७ ।

उदर में सांडके घुसकर भला कैसे वह सोया था ।
कहांपर मूर्त्ति है ऐसी हमें चलकर दिखाओ जी ॥८१॥
पिये था भांग वह ऐसी दही खाने से जो उतरी ।
कथनपर ऐसे भंगड़ोंके न धर्म अपना गंमाओ जी ॥८२॥
लिखा जो चार वेदों में उसी को सत्य तुम जानो ।
लिखा जो कुछ कि स्वामीजी ने वह उनमें दिखाओजी ॥८३॥
कहां वहां दायभाग और दण्ड के धनकी व्यवस्था है ।
विधि वलिवैश्व और संध्याकी ढूंढो तो न पाओजी ॥८४॥
सपिंड और गोत्रका बतला कहां है त्याग वेदों में ।
पता आठों विवाहों का सलक्षण वां लगाओ जी ॥८५॥
कहां है व्याख्या वेदों में सोलह संस्कारों की ।
दिखाओ या कि लज्जित हो किशिर अपना झुकाओजी ॥८६॥
हमारे आक्षेपों का तो उत्तर मान लेना है ।
वृथा तुम झूठ लिखकर नये गुल क्यों खिलाओजी ॥८७॥
नहीं है पुण्य सद्भाषण समान इसको करो धारण ।
नहीं है पाप अनृतसम इसे मनसे हटाओ जी ॥८८॥
किसी की वस्तु जो कुछ लो विना मांगेही लौटादो ।
न परधन और परस्त्री में कभी मनको चलाओजी ॥८९॥

८१। ८२ उक्त जीवनचरित्र का पृष्ठ ६० ।

किसी का वाक्य के वाणों से मर्म स्थान मत छेदो।
मधुर बाणी से निज आशय की समझाओ बुझाओ जी ॥ ९० ॥
पराये मांस को खाकर जो तन अपना बढ़ाता है।
नरक को वह कमाता है न जीवों को सताओजी ॥ ९१ ॥

सनातनधर्मावलम्बियों से निवेदन ॥

जनेऊ छोड़ कर तुम ने गला कण्ठी से बंधवाया।
करो उपनयन अथवा नाम शूद्रों में लिखाओ जी ॥ ९२ ॥
जो धन बेटी पै लेते हैं निकालो उन को जाति से।
है यह भी काम खोटा ही सगाई जो छुड़ाओ जी ॥ ९३ ॥
फिरो हो पूजते क़बरों को क्या अज्ञान छाया है।
विवाह की आदि में दूलह को क्यों खरपर चढ़ाओजी ॥ ९४ ॥
जुआ का खेलना छाड़ो जी वेश्याओं से मुह मोड़ो।
बड़ा दुष्कर्म है लड़कों से जो प्रीति बढ़ाओ जी ॥ ९५ ॥
करें खण्डन तुम्हारा और छलकर तुम से धन मांगें।
उन्हें देदेके तुम चन्दा वृथा धन क्यों लुटाओ जी ॥ ९६ ॥
जो रक्षा धर्म की चाहो मेरे ग्रन्थों को पढ़लाओ।
नहीं फिर मनमें पछिताओ कुढ़ो और दुःख पाओजी ॥ ९७ ॥
दयानन्दी गपोड़ों से बचाओ धर्म को अपने।
जो मिथ्या लेख हैं उनके वहंसबको तुम सुनाओजी ॥ ९८ ॥
कलि में धर्म के घातक सहस्रों ही प्रकट होंगे।

जहां तक बच सके तुमसे इसे उन से बचाओ जी ॥ ९९ ॥
किये क्या दान और जप तप किये क्या मन्दिर स्थापन।
न जब तक धर्मकी रक्षाका तुम बीड़ा उठाओजी ॥ १०० ॥
करो मिथ्यार्थ का खण्डन मेरे लेखों को पढ़ २ कर।
और अपने पुत्र पौत्रोंको भी समझाकर पढ़ाओजी ॥ १०१ ॥
ये पुस्तक आप छपवाओ जहां तहां मुफ्त बटवाओ।
परमयश लोकमें पाओ कि धर्म अपना बचाओजी ॥ १०२ ॥
धनी धर्मात्मा पुरुषों से है ये ही विनय मेरी।
जरा तो धर्म की रक्षा में धन अपना लगाओ जी ॥ १०३ ॥
जगत् के जाल और फन्दों से ईश्वर ने बचाया है।
जगन्नाथ उससिवामस्तककिसीको क्यों निवाओजी॥१०४॥इति